तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» रोमन साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार और स्रोत

प्रश्न 1 (आसान). रोमन साम्राज्य के केंद्र में कौन सा समुद्र था?

उत्तर – भूमध्यसागर

प्रश्न 2 (आसान). 'पैपाइरस' क्या था?

उत्तर – नील नदी के किनारे उगने वाला एक पौधा जिससे लेखन सामग्री बनती थी।

प्रश्न 3 (मध्यम). रोमन साम्राज्य किन तीन महाद्वीपों में फैला हुआ था?

उत्तर – यूरोप, पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका।

प्रश्न 4 (कठिन). रोमन इतिहास के अध्ययन के लिए उपयोग किए जाने वाले तीन मुख्य प्रकार के स्रोतों के नाम बताइए और प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर – 1. पाठ्य सामग्री (उदाहरण: वर्ष-वृत्तांत), 2. दस्तावेज़ (उदाहरण: पत्थर के अभिलेख), 3. भौतिक अवशेष (उदाहरण: सिक्के, इमारतें)।

» साम्राज्य का आरंभिक काल: प्रिंसिपेट और शासन प्रणाली

प्रश्न 5 (आसान). 'प्रिंसिपेट' शासन प्रणाली किसने स्थापित की थी?

उत्तर – सम्राट ऑगस्टस ने।

प्रश्न 6 (आसान). ऑगस्टस ने खुद को 'प्रमुख नागरिक' क्यों कहा?

उत्तर – सीनेट का सम्मान बनाए रखने के लिए।

प्रश्न 7 (मध्यम). रोमन साम्राज्य को किन दो मुख्य चरणों में बांटा गया है और उन्हें कौन-सी शताब्दी अलग करती है?

उत्तर – रोमन साम्राज्य को 'पूर्ववर्ती' और 'परवर्ती' चरणों में बांटा गया है, और तीसरी शताब्दी उन्हें अलग करती है।

प्रश्न 8 (कठिन). रोमन साम्राज्य में सेना की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी कि वह सम्राटों का भाग्य निर्धारित कर सकती थी? कारण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – रोमन सेना एक व्यावसायिक और बहुत बड़ी संगठित इकाई थी। इसमें सैनिकों को वेतन मिलता था और वे लंबे समय तक सेवा करते थे। अपनी संख्या और संगठन के कारण, सेना के पास अपार शक्ति थी। सैनिक अपनी मांगों के लिए अक्सर आंदोलन करते थे, और ये आंदोलन कभी-कभी सैनिक विद्रोह का रूप ले लेते थे, जिससे सम्राटों का शासन खतरे में पड़ जाता था या उन्हें अपनी गद्दी छोड़नी पड़ सकती थी। इसलिए सेना सम्राटों के भाग्य को तय करने में सक्षम थी।

» साम्राज्य का शहरीकरण और प्रशासन

प्रश्न 9 (आसान). रोमन साम्राज्य में प्रशासन का केंद्र क्या था?

उत्तर – शहर।

प्रश्न 10 (आसान). स्थानीय अभिजात वर्ग कौन थे?

उत्तर – शहरों के प्रभावशाली और धनी लोग।

प्रश्न 11 (मध्यम). साम्राज्य के प्रशासन में स्थानीय अभिजात वर्ग की मुख्य भूमिकाएँ क्या थीं?
उत्तर – वे स्थानीय प्रशासन में मदद करते थे, कानून-व्यवस्था बनाए रखते थे और कर इकट्ठा करने में सहयोग करते थे।

प्रश्न 12 (कठिन). शहरीकरण ने रोमन साम्राज्य के नियंत्रण और विस्तार को कैसे प्रभावित किया होगा?
उत्तर – शहरीकरण ने साम्राज्य को नियंत्रित और विस्तारित करने में मदद की क्योंकि शहरों ने प्रशासन के स्थानीय केंद्र के रूप में कार्य किया, जिससे सम्राट को दूरदराज के क्षेत्रों पर भी प्रभावी ढंग से शासन करने में सहायता मिली। ये शहर 'economic and cultural hubs' भी बन गए।

» तीसरी शताब्दी का संकट

प्रश्न 13 (आसान). तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य के लिए प्रमुख बाहरी खतरा कौन से दो समूह थे?
उत्तर – ईरानी साम्राज्य (ससानी वंश) और जर्मन जनजातियाँ।

प्रश्न 14 (आसान). कितने वर्षों में रोमन साम्राज्य ने तीसरी शताब्दी में 25 सम्राट देखे?
उत्तर – 47 वर्षों में।

प्रश्न 15 (मध्यम). ईरानी साम्राज्य का वह शासक कौन था जिसने रोमन सेना को हराने का दावा किया था?
उत्तर – शापुर प्रथम।

प्रश्न 16 (कठिन). तीसरी शताब्दी के संकट का रोमन साम्राज्य पर दीर्घकालिक प्रभाव क्या रहा होगा?
उत्तर – इस संकट ने साम्राज्य को कमजोर किया, उसकी सीमाओं को असुरक्षित किया और भविष्य में उसके विभाजन व पतन की नींव रखी। इससे अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ा।

» रोमन समाज: लिंग, साक्षरता और संस्कृति

प्रश्न 17 (आसान). रोमन समाज में किस प्रकार के परिवार का चलन था?
उत्तर – एकल परिवार (nuclear family)

प्रश्न 18 (आसान). रोमन महिलाओं को संपत्ति के क्या अधिकार थे?
उत्तर – उन्हें संपत्ति के स्वामित्व और संचालन में व्यापक कानूनी अधिकार प्राप्त थे।

प्रश्न 19 (मध्यम). रोमन समाज में साक्षरता के क्या अलग-अलग स्तर थे? एक उदाहरण दें।
उत्तर – साक्षरता की दरें साम्राज्य के विभिन्न भागों में अलग-अलग थीं। पोम्पेई जैसे शहरों में 'casual literacy' व्यापक थी, जहाँ दीवारों पर विज्ञापन और 'graffiti' मिलते थे। इसके विपरीत, मिस्र में 'formal documents' व्यावसायिक लिपिकों द्वारा लिखे जाते थे और कई लोग पढ़-लिख नहीं पाते थे।

प्रश्न 20 (कठिन). रोमन साम्राज्य में सांस्कृतिक विविधता के कौन से रूप दिखाई देते थे? विस्तार से समझाइए।
उत्तर – रोमन साम्राज्य में सांस्कृतिक विविधता कई रूपों में दिखती थी: धार्मिक संप्रदायों और स्थानीय देवी-देवताओं की विविधता, बोलचाल की अनेक भाषाएँ (जैसे अरामाइक, कॉप्टिक, प्यूनिक, बरबर, सेल्टिक), वेशभूषा की अलग-अलग शैलियाँ, तरह-तरह के भोजन, और सामाजिक संगठनों के भिन्न रूप। कुछ भाषाएँ 'purely oral' थीं और उनके लिए लिपि बाद में विकसित हुई।

» आर्थिक विस्तार और व्यापार

प्रश्न 21 (आसान). रोमन साम्राज्य के तीन मुख्य व्यापारिक उत्पाद कौन से थे?
उत्तर – गेहूँ, अंगूरी शराब और जैतून का तेल।

प्रश्न 22 (आसान). तरल पदार्थों के परिवहन के लिए किस विशेष पात्र का उपयोग होता था?
उत्तर – एम्फोरा (amphora)।

प्रश्न 23 (मध्यम). स्पेन में जैतून के तेल का उत्पादन किस काल में चरम पर था और उसे किस प्रकार के एम्फोरा में ले जाया जाता था?
उत्तर – स्पेन में जैतून के तेल का उत्पादन 140-160 ईस्वी के वर्षों में अपने चरम पर था, और इसे 'ड्रेसल-20' नामक एम्फोरा में ले जाया जाता था।

प्रश्न 24 (कठिन). रोमन अर्थव्यवस्था में तकनीकी प्रगति के दो उदाहरण दीजिए और समझाइए कि वे कैसे महत्वपूर्ण थे।
उत्तर – तकनीकी प्रगति के दो उदाहरण हैं जल-शक्ति से चलने वाली मिलें और स्पेन की खानों में जल-शक्ति से खुदाई। जल-शक्ति से चलने वाली मिलें अनाज पीसने और अन्य औद्योगिक कार्यों में इस्तेमाल होती थीं, जिससे उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। स्पेन की सोने और चाँदी की खानों में इसी तकनीक से इतनी खुदाई होती थी कि 19वीं सदी तक वैसा उत्पादन स्तर फिर नहीं देखा गया। यह दर्शाता है कि रोमन अर्थव्यवस्था आधुनिक तकनीक का उपयोग करके बहुत उन्नत थी।

» श्रम पर नियंत्रण और दासता

प्रश्न 25 (आसान). रोमन साम्राज्य में दासों की बड़ी संख्या के लिए एक शब्द बताओ।
उत्तर – पूँजी-निवेश

प्रश्न 26 (आसान). युद्ध कम होने के बाद दासों की आपूर्ति में कमी आने पर कौन से दो विकल्प अपनाए गए?
उत्तर – दास प्रजनन और वेतनभोगी मजदूर

प्रश्न 27 (मध्यम). रोमन साम्राज्य में 'ऋण-बद्धता' का क्या अर्थ था? एक उदाहरण भी दो।
उत्तर – 'ऋण-बद्धता' का अर्थ था कि गरीब लोग कर्ज चुकाने के लिए खुद को या अपने बच्चों को बंधुआ मजदूर बना लेते थे। जैसे माता-पिता अपने बच्चों को 25 साल के लिए बेच देते थे।

प्रश्न 28 (कठिन). रोमन साम्राज्य में श्रम पर नियंत्रण के कठोर तरीके क्यों अपनाए जाते थे? क्या ये तरीके सभी प्रकार के श्रमिकों पर लागू होते थे?
उत्तर – कठोर तरीके इसलिए अपनाए जाते थे ताकि कामगारों से अधिकतम काम लिया जा सके और उन्हें भागने से रोका जा सके। जैसे ब्रांडिंग और सख्त निरीक्षण। ये तरीके मुख्य रूप से दासों और कुछ गरीब वेतनभोगी मजदूरों पर लागू होते थे, लेकिन वेतनभोगी मजदूरों को अच्छी मजदूरी देकर आकर्षित करने के उदाहरण भी मिलते हैं, जिससे पता चलता है कि सभी पर एक जैसे कठोर नियम लागू नहीं होते थे।

» रोमन सामाजिक श्रेणियाँ

प्रश्न 29 (आसान). रोमन समाज में सबसे शक्तिशाली और धनी वर्ग कौन सा था?
उत्तर – सेनेटर वर्ग।

प्रश्न 30 (आसान). अश्वारोही वर्ग को 'इक्वाइट्स' क्यों कहा जाता था?
उत्तर – क्योंकि इनकी संपत्ति इन्हें घुड़सेना में भर्ती होने की योग्यता देती थी।

प्रश्न 31 (मध्यम). मध्यम वर्ग में कौन-कौन लोग शामिल थे और उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत क्या था?
उत्तर – मध्यम वर्ग में नौकरशाही और सेना से जुड़े आम लोग, साथ ही समृद्ध सौदागर और किसान शामिल थे। उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत सरकारी सेवा और राज्य पर निर्भरता थी।

प्रश्न 32 (कठिन). परवर्ती साम्राज्य में सेनेटर और अश्वारोही वर्ग में क्या बदलाव आया था?
उत्तर – परवर्ती साम्राज्य में, सेनेटर और अश्वारोही वर्ग एक 'विस्तृत अभिजात वर्ग' के रूप में एकीकृत हो गए थे। इस नए अभिजात वर्ग में से आधे से ज़्यादा परिवार अफ्रीकी या पूर्वी मूल के थे, और वे बहुत धनी थे।

» परवर्ती पुराकाल: प्रशासनिक और मौद्रिक सुधार

प्रश्न 33 (आसान). परवर्ती पुराकाल मोटे तौर पर कब से कब तक था?
उत्तर – चौथी से सातवीं शताब्दी तक।

प्रश्न 34 (आसान). डायोक्लीशियन ने साम्राज्य को छोटा क्यों किया?
उत्तर – क्योंकि उसका विस्तार बहुत ज्यादा हो गया था और कुछ प्रदेशों का सामरिक/आर्थिक महत्व नहीं था।

प्रश्न 35 (मध्यम). कॉन्स्टेंटाइन ने कौन सा नया सिक्का चलाया और उसकी क्या खासियत थी?
उत्तर – उसने 'सॉलिडस' नाम का सिक्का चलाया जो 4.5 ग्राम शुद्ध सोने का बना था।

प्रश्न 36 (कठिन). डायोक्लीशियन और कॉन्स्टेंटाइन के सुधारों से रोमन साम्राज्य की अर्थव्यवस्था और शासन पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – डायोक्लीशियन के सुधारों से प्रशासन अधिक केंद्रित और सुरक्षित हुआ, जबकि कॉन्स्टेंटाइन के 'सॉलिडस' सिक्के से 'मौद्रिक स्थिरता' आई और 'आर्थिक विकास' में तेजी आई, जिससे शहरी संपदा और समृद्धि बढ़ी।

» परवर्ती पुराकाल: धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तन

प्रश्न 37 (आसान). ईसाई धर्म को रोमन साम्राज्य का 'राजधर्म' किसने बनाया?
उत्तर – सम्राट कॉन्स्टेंटाइन

प्रश्न 38 (आसान). 'इस्लाम' का उदय किस शताब्दी में हुआ?
उत्तर – सातवीं शताब्दी

प्रश्न 39 (मध्यम). परवर्ती पुराकाल में 'पश्चिम में रोमन साम्राज्य' का क्या हुआ, जबकि 'पूर्व' में क्या स्थिति थी?
उत्तर – पश्चिम में साम्राज्य 'राजनीतिक दृष्टि से विखंडित' हो गया, क्योंकि उत्तर से आए 'जर्मन मूल के समूहों' (जैसे गोथ, वैंडल) ने अपने राज्य स्थापित कर लिए थे। जबकि पूर्व में साम्राज्य 'संयुक्त बना रहा' और इसे 'बाइजेंटियम' के नाम से जाना जाने लगा।

प्रश्न 40 (कठिन). ईसाई धर्म को राजधर्म बनाने के बावजूद, 'बहुदेववाद' तुरंत गायब क्यों नहीं हुआ? क्या कारण थे?
उत्तर – बहुदेववाद तुरंत गायब नहीं हुआ क्योंकि यह विशेष रूप से 'पश्चिमी प्रांतों' में 'गहराई से जमा हुआ' था। 'ईसाई धर्म प्रचारक' लगातार 'बहुदेववादी मत-मतांतरों और धार्मिक रीति-रिवाजों का विरोध' करते रहे। 'चौथी शताब्दी' में 'धार्मिक समुदायों के बीच की सीमाएँ' इतनी कठोर नहीं थीं, लेकिन 'शक्तिशाली बिशपों' ने अपने अनुयायियों को 'कड़ाई से धार्मिक विश्वासों का पालन' करने का पाठ पढ़ाया, जिससे ये सीमाएँ समय के साथ कठोर होती गईं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. रोमन साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार किन तीन महाद्वीपों में था और इसके इतिहास के मुख्य स्रोत क्या हैं?

› पहले हम भौगोलिक विस्तार को समझेंगे। रोमन साम्राज्य 'यूरोप', 'पश्चिमी एशिया' और 'उत्तरी अफ्रीका' तक फैला हुआ था। इसके केंद्र में 'भूमध्यसागर' था।

› अब, इसके इतिहास के मुख्य स्रोतों पर आते हैं। इतिहासकारों ने इन्हें तीन श्रेणियों में बांटा है।

› पहला, 'पाठ्य सामग्री': इसमें उस समय के लोगों द्वारा लिखे गए 'वर्ष-वृत्तांत', 'पत्र' और 'कानून' शामिल हैं।

› दूसरा, 'दस्तावेज़ी स्रोत': इसमें 'पत्थर की शिलाओं पर खुदे अभिलेख' और 'पैपाइरस के पत्तों पर लिखी पांडुलिपियाँ' आती हैं।

› तीसरा, 'भौतिक अवशेष': इसमें 'इमारतें', 'स्मारक', 'मिट्टी के बर्तन', 'सिक्के' और 'पच्चीकारी का सामान' जैसी चीज़ें शामिल हैं।

उत्तर – रोमन साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार यूरोप, पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका में था। इसके इतिहास के मुख्य स्रोत पाठ्य सामग्री (वर्ष-वृत्तांत, पत्र), दस्तावेज़ (अभिलेख, पैपाइरस) और भौतिक अवशेष (इमारतें, सिक्के) हैं।

उदाहरण 2. रोमन साम्राज्य में 'प्रिंसिपेट' प्रणाली के अंतर्गत शासन के तीन प्रमुख 'खिलाड़ी' कौन-कौन से थे, और उनमें से प्रत्येक की भूमिका संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

› पहला 'खिलाड़ी' था सम्राट। सम्राट 'ऑगस्टस' ने 'प्रिंसिपेट' शासन स्थापित किया था, जिसमें वह वास्तविक सत्ता का स्रोत था, लेकिन उसने खुद को 'प्रमुख नागरिक' या 'प्रिन्सेप्स' कहकर सीनेट का सम्मान बनाए रखा। उसकी भूमिका सर्वोच्च शासक की थी।

› दूसरा 'खिलाड़ी' था सीनेट। यह एक पुरानी और प्रतिष्ठित संस्था थी जिसमें रोम के धनी और कुलीन परिवार के सदस्य होते थे। सीनेट सम्राटों के व्यवहार पर नज़र रखती थी और अच्छे सम्राट वे माने जाते थे जो सीनेट के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे।

› तीसरा और बहुत महत्वपूर्ण 'खिलाड़ी' थी सेना। यह एक व्यावसायिक सेना थी जिसमें सैनिकों को वेतन मिलता था और वे कम से कम 25 साल सेवा करते थे। सेना साम्राज्य में सबसे बड़ी संगठित इकाई थी और उसके पास इतनी शक्ति थी कि वह सम्राटों का भाग्य निर्धारित कर सकती थी, अक्सर बेहतर वेतन और सेवा शर्तों के लिए आंदोलन भी करती थी।

उत्तर – प्रिंसिपेट प्रणाली के तीन प्रमुख 'खिलाड़ी' सम्राट, सीनेट और सेना थे। सम्राट सर्वोच्च शासक था लेकिन खुद को 'प्रमुख नागरिक' कहता था; सीनेट कुलीन परिवारों की एक शक्तिशाली संस्था थी जो सम्राटों पर प्रभाव डालती थी; और सेना एक व्यावसायिक व संगठित इकाई थी जिसमें सम्राटों का भाग्य तय करने की शक्ति थी।

उदाहरण 3. रोमन साम्राज्य में स्थानीय अभिजात वर्ग की क्या भूमिका थी?

› पहला कदम, स्थानीय अभिजात वर्ग कौन थे? ये 'wealthy and influential people' यानी धनी और प्रभावशाली लोग थे जो साम्राज्य के 'provinces' यानी प्रांतों या शहरों में रहते थे।

› दूसरा कदम, उनकी भूमिका क्या थी? वे 'acted as local leaders' यानी स्थानीय नेताओं के रूप में काम करते थे।

› तीसरा कदम, वे साम्राज्य की कैसे मदद करते थे? वे 'helped in the administration of cities' यानी शहरों के प्रशासन में मदद करते थे, 'collected taxes' यानी कर इकट्ठा करते थे, और 'maintained law and order' यानी कानून-व्यवस्था बनाए रखते थे।

› चौथा कदम, बदले में उन्हें क्या मिलता था? सम्राट उन्हें 'recognition and privileges' यानी मान्यता और विशेष अधिकार देता था।

› पांचवां कदम, इसका परिणाम क्या हुआ? इस व्यवस्था से 'the empire remained stable and controlled' यानी साम्राज्य स्थिर और नियंत्रित रहा, क्योंकि केंद्र और स्थानीय स्तर पर सहयोग था।

उत्तर – स्थानीय अभिजात वर्ग शहरों और प्रांतों के धनी तथा प्रभावशाली लोग थे, जो स्थानीय नेतृत्व प्रदान करते थे, प्रशासन में मदद करते थे, कर इकट्ठा करते थे और कानून-व्यवस्था बनाए रखते थे। इससे सम्राट को इतना बड़ा साम्राज्य चलाने में बहुत मदद मिलती थी।

उदाहरण 4. तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य के समक्ष क्या प्रमुख चुनौतियां थीं?

› पहला, साम्राज्य को पूर्व में 'ससानी वंश' के आक्रामक ईरानी साम्राज्य का सामना करना पड़ा। ईरान के शासक 'शापुर प्रथम' ने रोमन सेना को हराकर 'एंटिऑक' जैसी पूर्वी राजधानी पर भी कब्ज़ा कर लिया था।

› दूसरा, उत्तर की ओर से 'राइन' और 'डैन्यूब' नदियों की सीमाओं पर 'एलमन्नाइ', 'फ्रैंक' और 'गोथ' जैसी 'जर्मन जनजातियों' ने बार-बार हमला करना शुरू कर दिया।

› तीसरा, 'आंतरिक अस्थिरता' भी बहुत थी। इस दौरान सिर्फ 47 वर्षों में 25 सम्राट बदल गए, जिससे सत्ता में कोई स्थिरता नहीं रही और साम्राज्य कमजोर होता चला गया।

उत्तर – तीसरी शताब्दी में रोमन साम्राज्य को ईरानी साम्राज्य के आक्रमण, जर्मन जनजातियों के लगातार हमले और आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता (लगातार बदलते सम्राट) जैसी प्रमुख चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

उदाहरण 5. रोमन समाज में विवाह और महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

› रोमन समाज में 'late Republican period' तक पत्नी अपने पति को अपनी संपत्ति हस्तांतरित नहीं करती थी, 'but retained her full rights in her paternal family.' इसका मतलब है कि वह अपने पिता के परिवार में अपने पूरे अधिकार बनाए रखती थी।

› महिला को 'property ownership' और 'management' में 'extensive legal rights' थे। वह अपने पिता की 'chief heiress' बनी रहती थी और उनकी मृत्यु पर 'independent owner of property' बन जाती थी।

› कानून के अनुसार 'husband and wife were not a single financial entity' बल्कि 'separate financial entities' थे। पत्नी को पूरी कानूनी स्वतंत्रता थी।

› तलाक देना 'relatively easy' था, जिसके लिए 'only a notice of intent to dissolve the marriage' काफी था।

› पुरुषों की शादी '28-29 to 30-32 years of age' के बीच होती थी, जबकि लड़कियों की शादी '16-18 and 22-23 years of age' में होती थी, जसिसे 'age gap' रहता था।

› विवाह अक्सर 'family-arranged' होते थे, और 'husbands often dominated their wives' – इसका मतलब यह नहीं कि कानूनी अधिकार नहीं थे, पर सामाजिक रूप से पुरुषों का दबदबा था।

उत्तर – रोमन समाज में महिलाओं को संपत्ति के व्यापक कानूनी अधिकार प्राप्त थे, वे अपने पिता की मुख्य उत्तराधिकारी होती थीं और तलाक भी आसानी से हो जाता था। हालांकि, विवाहों में आयु का अंतर होता था और अक्सर पति का दबदबा रहता था, जैसा कि सेंट ऑगस्टाइन ने भी अपनी माँ के बारे में बताया है।

उदाहरण 6. रोमन साम्राज्य में व्यापार के लिए कौन सी तीन प्रमुख वस्तुएँ थीं और उन्हें किस पात्र में ले जाया जाता था?

› सबसे पहले, हम उन मुख्य वस्तुओं की पहचान करेंगे जिनकी रोमन साम्राज्य में बहुत मांग थी और जिनका सबसे ज़्यादा व्यापार होता था।

› फिर, हम यह पता लगाएंगे कि इन तरल वस्तुओं को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए किस खास तरह के कंटेनर या पात्र का इस्तेमाल किया जाता था।

› इन जानकारी को जोड़कर हम अपना उत्तर तैयार करेंगे।

उत्तर – रोमन साम्राज्य में व्यापार के लिए तीन प्रमुख वस्तुएँ थीं गेहूँ, अंगूरी शराब और जैतून का तेल। इनमें से शराब और जैतून के तेल जैसे तरल पदार्थों को 'एम्फोरा' (amphora) नामक मिट्टी के विशेष मटकों में ले जाया जाता था।

उदाहरण 7. मान लीजिए एक रोमन जमींदार को अपनी खेती के लिए मजदूरों की जरूरत है। युद्ध कम होने से उसे नए दास नहीं मिल रहे। वह किस प्रकार के श्रमिकों का उपयोग कर सकता है और उन पर कैसे नियंत्रण रख सकता है, दो तरीके बताओ।

› पहला तरीका: जमींदार 'वेतनभोगी मज़दूरों' को काम पर रख सकता है। जैसे आजकल दिहाड़ी मजदूर होते हैं, वैसे ही वह उन्हें ज़रूरत के हिसाब से थोड़े समय के लिए काम पर रखेगा और काम के बदले पैसा देगा।

› दूसरा तरीका: वह 'दास प्रजनन' को बढ़ावा दे सकता है, यानी अपने मौजूदा दासों से ज़्यादा बच्चे पैदा करने को प्रोत्साहित कर सकता है ताकि भविष्य में काम करने वाले मिलें।

› नियंत्रण का तरीका: वह कामगारों को 'छोटे दलों' में बांट सकता है, जैसे 10-10 लोगों का समूह, ताकि हर समूह के काम पर आसानी से नज़र रखी जा सके कि कौन काम कर रहा है और कौन कामचोरी कर रहा है।

उत्तर – रोमन जमींदार वेतनभोगी मजदूरों का उपयोग कर सकता है और दास प्रजनन को बढ़ावा दे सकता है। नियंत्रण के लिए वह मजदूरों को छोटे दलों में बांटकर निगरानी करेगा।

उदाहरण 8. रोमन समाज के मुख्य सामाजिक वर्गों का वर्णन कीजिए।

› सबसे पहले, सेनेटर वर्ग था। 'सैनेटर' सबसे शक्तिशाली और धनी वर्ग था। ये लोग 'पैट्रेस' कहलाते थे, जिसका मतलब 'पिता' होता है। तीसरी शताब्दी तक लगभग 1000 सदस्य थे इस वर्ग में, और आधे तो इटली के ही परिवारों से थे। बाद में, ये 'अश्वारोही' वर्ग के साथ मिलकर एक बड़ा 'अभिजात वर्ग' बन गए।

› दूसरा वर्ग था, 'अश्वारोही' या 'नाइट' वर्ग। यह भी 'धनी और शक्तिशाली' था। इनकी संपत्ति इन्हें घुड़सेना में भर्ती होने की योग्यता देती थी, इसलिए इन्हें 'इक्वाइट्स' कहते थे। 'सैनेटरों की तरह' ये भी ज़मींदार होते थे, पर साथ ही 'जहाज़ों के मालिक, व्यापारी और साहूकार' भी होते थे।

› तीसरा वर्ग था 'मध्यम वर्ग'। इसमें 'नौकरशाही और सेना' से जुड़े 'आम लोग' शामिल थे। साथ ही 'समृद्ध सौदागर और

किसान' भी इसी वर्ग में आते थे। ये लोग 'सरकारी सेवा और राज्य पर निर्भर' रहते थे अपनी आजीविका के लिए।

› सबसे नीचे 'निम्नतर वर्ग' था, जिसे 'ह्यूमिलिओरिस' कहा जाता था। इसमें 'ग्रामीण श्रमिक', 'औद्योगिक और खनन प्रतिष्ठानों के कामगार', 'प्रवासी कामगार', 'स्वरोजगार वाले शिल्पकार' और 'हज़ारों गुलाम' शामिल थे। ये लोग समाज के सबसे निचले तबके में आते थे और उनकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं होती थी।

उत्तर – रोमन समाज मुख्यतः चार मुख्य सामाजिक वर्गों में बंटा हुआ था: सेनेटर, अश्वारोही (नाइट), मध्यम वर्ग और निम्नतर वर्ग (ह्यूमिलिओरिस)। सेनेटर और अश्वारोही वर्ग 'धनी अभिजात वर्ग' का हिस्सा थे, जबकि मध्यम वर्ग में सरकारी कर्मचारी, व्यापारी और किसान आते थे। निम्नतर वर्ग में ग्रामीण और औद्योगिक श्रमिक, प्रवासी कामगार और दास शामिल थे, जो समाज के सबसे निचले पायदान पर थे।

उदाहरण 9. सम्राट डायोक्लीशियन ने रोमन साम्राज्य में क्या मुख्य प्रशासनिक सुधार किए?

› पहला कदम: डायोक्लीशियन ने महसूस किया कि 'साम्राज्य का विस्तार बहुत ज्यादा हो चुका है' और उसे संभालना मुश्किल हो रहा है।

› दूसरा कदम: उसने उन 'अनेक प्रदेशों को छोड़' दिया 'जिनका सामरिक या आर्थिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं था', जिससे 'साम्राज्य थोड़ा छोटा' हो गया।

› तीसरा कदम: उसने 'प्रांतों का पुनर्गठन' किया और 'असैनिक कार्यों को सैनिक कार्यों से अलग कर दिया'।

› चौथा कदम: उसने 'सेनापतियों (Duces) को अधिक स्वायत्तता' प्रदान की, जिससे वे 'सैन्य अधिकारी अधिक शक्तिशाली' समूह के रूप में उभरे।

उत्तर – डायोक्लीशियन ने साम्राज्य को छोटा किया, प्रांतों का पुनर्गठन किया, और सैनिक व असैनिक कार्यों को अलग कर सेनापतियों को ज्यादा अधिकार दिए।

उदाहरण 10. परवर्ती पुराकाल में 'कॉन्स्टेंटाइन' के धार्मिक निर्णय और 'सातवीं शताब्दी' के एक महत्वपूर्ण धार्मिक उदय का वर्णन करें।

› सबसे पहले, हम 'कॉन्स्टेंटाइन' के निर्णय पर आते हैं। चौथी शताब्दी में, 'सम्राट कॉन्स्टेंटाइन' ने एक बहुत बड़ा कदम उठाया। उसने 'ईसाई धर्म को राजधर्म' बना लिया। इसका मतलब है कि अब ईसाई धर्म को 'राज्य की तरफ से पूरी मान्यता' मिल गई। 'The Christianisation of the empire' यानी साम्राज्य का ईसाईकरण एक 'धीमी और जटिल प्रक्रिया' थी, न कि एक दिन में होने वाला बदलाव।

› दूसरा बड़ा धार्मिक परिवर्तन 'सातवीं शताब्दी' में हुआ। इस समय 'इस्लाम का उदय' हुआ। 'अरब प्रदेश से शुरू होने वाले इस्लाम के विस्तार को 'प्राचीन विश्व इतिहास की सबसे बड़ी राजनीतिक क्रांति' कहा जाता है।' पैगंबर मुहम्मद की मृत्यु के कुछ ही सालों में 'पूर्वी रोमन और ससानी दोनों राज्यों के बड़े-बड़े भाग' अरबों के 'कब्ज़े में' आ गए।

› इन दोनों परिवर्तनों ने रोमन साम्राज्य और उसके आसपास की दुनिया को 'धार्मिक और राजनीतिक दोनों तरह से' पूरी तरह बदल दिया।

उत्तर – कॉन्स्टेंटाइन ने ईसाई धर्म को राजधर्म बनाया, जो एक क्रमिक प्रक्रिया थी, और सातवीं शताब्दी में इस्लाम का उदय हुआ, जिसने पूर्वी रोमन और ससानी साम्राज्य के बड़े हिस्सों को बदल दिया।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• रोमन साम्राज्य के भौगोलिक विस्तार और तीनों प्रकार के स्रोतों को उनके उदाहरणों के साथ याद रखना बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

• यह विषय रोमन समाज की गहरी समझ के लिए महत्वपूर्ण है। खासकर 'दास प्रजनन' और 'ऋण-बद्धता' जैसे शब्दों की परिभाषा और उनके प्रभावों पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं।

• डायोक्लीशियन और कॉन्स्टेंटाइन के अलग-अलग सुधारों को स्पष्ट रूप से याद करें, खासकर 'सॉलिडस' सिक्के और 'कुस्तुनतुनिया' के बारे में अक्सर पूछा जाता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 'दीर्घ उत्तरीय प्रश्न' आते हैं, खासकर 'ईसाई धर्म के उदय' और 'साम्राज्य के विभाजन' पर ध्यान दें।

एक नज़र में रिवीज़न

› रोमन साम्राज्य: यूरोप, पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ्रीका; स्रोत: पाठ्य, दस्तावेज़, भौतिक अवशेष।

› रोमन साम्राज्य में दासता, वेतनभोगी मजदूर, और कठोर श्रम नियंत्रण (ब्रांडिंग, ऋण-बद्धता)।

› परवर्ती पुराकाल (4-7 शताब्दी): डायोक्लीशियन (प्रशासनिक सुधार), कॉन्स्टेंटाइन (सॉलिडस सिक्का, नई राजधानी)।

› कॉन्स्टेंटाइन का ईसाई धर्म, इस्लाम का उदय, पश्चिम का विखंडन, पूर्व का स्थायित्व।